तुलसी का काव्य और समन्वय की चेष्टा

ज्योति कुमारी,
शोधार्थी
Jyotikumari30011993@gmail.com

गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन–वृत के बारे में विद्वानों के विविध मत प्रस्तुत किये है।

– शिव सरोज रचित 'मूल गोसाई चरित्र' तथा महात्मा रघुवर रचित ''तुलसी चरित्र' में गोस्वामी जी का जन्म सम्वत 1554 ई0 माना गया है ।

– शिवामेह सरोज में गोस्वामी जी का जन्म सम्वत् 1554 ई0 माना गया है ।

– मिर्जापुर के प्रसिद्व रामभक्त पग्रित रामगुलाम द्विवेदी ने जनश्रुति के आधार पर इनका जन्म सम्वत् 1589 ई0 स्वीकार किया है ।

– तुलसीदास की मृत्यु सन् 1680 अर्थात 1623 ई0 में हुई उनकी मृत्यु के सन्दर्भ में दोहा है –

''सवत् सोलह सौ असी, असी गंग के तीर

श्रावण शुक्ल सप्तमी, तुलसी तज्यौ शरीर''

गोस्वामी जी के पित के जनक आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था । इनका बालककाल विषम परिस्थितियों में गुजरा कहा जाता है कि इनकी माँ की मृत्यु प्रभूतिकाल में ही हो गई । इनका पालन पोषण मुनिका नाम की दासी ने किया । इन्होने नरहरिदास से शिक्षा–दीक्षा ली और इन्ही गुरू से तुलसीराम को रामकथा सुनने को मिली । नरहरिदास जी के साथ तुलसी जो काशी आ गए एवं परम विद्वान शेष सनातनजी की पाठशाला में 15 वर्ष तक अध्ययन करके शास्त्र पारंगत बने और जन्मभूमि रायपुर लौटे । तुलसीदास जी का विवाह रत्नावली नामक स्त्री से हुआ ये अपनी पत्नी के प्रति बहुत अनुरक्त थे । कहा जाता है कि इनकी पत्नी एक बार मायके गई तो तुलसीदास जी उनके बिना रह नहीं पाएं और चढ़ी नदी में तैरकर उनके पास जा पहुॅचे तब इनकी पत्नी रत्नावली ने इन्हें धिन्कारते हुए कहा –

लाज न लागत आपको दौरे आयहु साथ ।

धिक –धिक ऐसे प्रेम को कहा कहौ मैं नाथ ।।

अस्थि चर्म मम देह यह ता सो ऐसी प्रीति ।

नेकु जो होती राम से तो काहे अब भीति ।।

इसके बाद तुलसीदास ने राम के प्रति अनुरक्त होकर कई ग्रन्थों की रचना की जिनमें से बारह ग्रन्थ प्रामाणिक माने जाते है :– बेराग्य संदीपनी, रामलाल नहछू रामाज्ञा प्रश्न, बरबै रामायण, जानकी मंगल, श्री कृष्ण गीतावली, पार्वती मंगल, गीतावली, दोहावली, कवितावली (भक्ति रामायण) विन पत्रिका रामचरित मानस ।

इन्होने वेराग्य संदीपनी में 'अखिल जान का सार' कहा है तथा तुलसी ने 'रामचरितमानस' की रचना संवत् 1631 अर्थात् 1574 ई0 में आरम्भ की जैसा कि इस अपीली से स्पष्ट है :–

''संवत् सोलह सौ इक्तीसा ।

करउः क्या हरिपर पर सीसा ।।''

तुलसी हिन्दी के अत्यन्त लोकप्रिय कवि है । उन्हें हिन्दी का 'जातीय कवि' कहा जाता है । उन्होने अवधी और ब्रजभाषा को समान अधिकार से रचना की है । इन्होने वीरगाथा काव्य की छप्पम पद्वति, विद्यापति और सूरदास की गीत पद्वति, गंग आदि कवियों की कवितों की भक्ति सवैया पद्वति ,

रहीम के सामन दोहें और बरवें और जायसी की तरह दोहा–चौपाई पद्वति से रनचनाएं की है :–

रामचरित मानस में सात काण्ड है ।

वालामण्ड, अयोध्या काण्ड, अख्यकाण्ड, किणिधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंका–काण्ड और उत्तरकाण्ड ।

उत्तराकाण्ड में ज्ञान और भक्ति का विशुद्व विवेचन है ।

व्यक्तिगत एकांतिक अनुमूर्तियों की अभिव्यक्ति की दृष्टि से विनय पत्रिका भक्ति काव्य में अनूठी है । इसमें 280 पद, भाषा ब्रज और शांत रस की प्रज्ञानता है । तुलसी ने 'गीतावली' और 'कवितावली' में मुक्तकों में क्या कहीं है । इन दोनों कृतियों में सात–सात काण्ड है । इन मुक्तकों को एक साथ पढिये तो प्रबंध काव्य का और अलग–अलग पढ़िये तो मुक्तक काव्य का आनन्द देते है । कविता रामायण गीतावली कवित्य सवैया शैली की रचना है । इसमें भी सात काण्ड है इसमें भी मुक्तर और प्रबन्ध काव्य का आनन्द मिलता है । 'रामाज्ञा प्रश्न' में सात सर्ग है । प्रत्येक सर्ग में सात मेष्ठर है और प्रत्येक कोष्ठक में सात दोहे है । तुलसीदास ने 'रामाज्ञा प्रश्न' की रचना मात्र छह घन्टे में की थी । दोहावली में तुलसीराम द्वारा समय–समय पर लिखे गए 573 दोहा और 22 सोरण संग्रहीत है । 'वैराग्य सदीपनी' को 64 दोहे, 2 सोरठे और 14 चौपाईया है । यह गंन्थ चार भागों में विभाजित है – मंगलाचरण और वस्तु संकेत, संत स्वभाव का वर्णन, संत महिमा वर्णन, शान्ति वर्णन। तुलसी जी ने वरवै रामायण की रचना रहीम के बरवै नायिका भेद से प्रभावित होकर की थी। बरवै रामायण 69 बरवै छदों का एक छोटा सा काव्य है। यह सात मण्डो में विभक्त है । मण्डो का विस्तार अनुपात रहित है तथा इसमें 'मंगलाचरण' नही है। पार्वती मंगल में शिव–पार्वती विवाह वर्णित है। इसका आधार कालीदास कृत 'कुमारसम्भव' है। जानकी मंगल में आधार 'वाल्मीकि रामायण' है। इसमें राम सीता के विवाह का वर्णन है। 'रामलला' महछू में 20 दोहा छंद अवधी भाषा के है।

तुलसी का काव्य और समन्तत्यवाद

हिन्दु धर्म क अवतार के रूप में तुलसी दास ने मानव जाति को पतन होने से बचाया ये बात देखकर 'गीता' को एक श्लोक की ओर ध्यान जाता है।

''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिभवति भारत ।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मान सृजाम्हम्
परित्राणाम साधूना, विनाशाप च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थय सम्भवनि युगे–युगे'' ।

अर्थात् जब–जब धर्म की हानि होती है । तब–तब धर्म के उत्थान के लिए साधुओं के परित्याग के उत्थान के लिए तथा दुष्ट आत्माओं के विनाश के लिये मैं अवतार लिया करता हूँ । भारत भूमि कर्म भूमि है । जब–जब इसपर अत्याचार और अनाचार हुआ तब समय के अनुकूल किसी सत एवम् महात्मा का अवतार होता रहा है ।

तुलसी भक्तिकाल के सबसे बड़े समन्वयवादी कति थे । जिस समय इनका जन्म हुआ था उस समय के समाज के आगे उँचा आदर्श नही था । समाज के उच्च स्तर के लोग विलासिता के पक में मग्न थे । निचले स्तर के पुरूष और स्त्री, दरिद्र अशिक्षित रोग ग्रस्त थे । वेरागी हो जाना मामूली बात थी । जिसके घर में सम्पत्ति नष्ट हो गयी या स्त्री मर गई संसार में आकर्षण नही रहा, वह सन्यासी हो जाता था । सारा देश अनेक प्रकार के साधुओं से भरा हुआ था । समाज में धर्म की मर्यादा बढ़ रही थी। दरिद्रता हीनता का लक्षण समझी जाती थी । पंडितों और ज्ञानियों का समाज के साथ कोई भी सम्पर्क नही था । सारा देश बिखरा हुआ,

आर्दशहीन और बिना लक्ष्य का हो रहा था । ऐसे समय में एक ऐसी आस्था की आवश्यकता थी जो इस परस्पर च्छिित और भ्रष्ट टुकड़ों में योग–सत्र स्थापित करे तुलसीदास का अर्विभात ऐसे ही समय में हुआ था ।

(1) साहित्यक भाषा और जनभाषा का समन्वयः

तुलसी ने विनय पत्रिका में अपनी समन्यवादी प्रतिमा का परिचय दिया है तथा साथ में भाषा के क्षेत्र में भी योगदान दिया है । उन्होने उसे द्विवानो एवं सामान्यजनों के लिए समान रूप से उपयोगी बनाने के लिए उसमें संस्कृत गामित तथा नील–चाल की शब्दावली से मुक्त दोनों प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है

''श्री रामचन्द्र कृपालु भरत मन हरण भव मय दारून ।

नवक्रन लोचन कंज मुख कर कंज पर कंजारून'' ।।

जनभाषा का उदाहरणः –

''धूत म्हौ अवधूत क्हौ''

जनक में भूखों भिखारी हो गरीब निवाज

(2) भक्ति और ज्ञान का समन्वयः

तुलसी मूलतः भक्त कवि थे अतः भक्ति में उन्होने सर्वश्रेष्ठ बतलाया है । किन्तु साथ ही ज्ञान की महत्ता में भी उन्होने श्रेष्ठता प्रदान की है । वस्तुतः उन्होंने ज्ञान और भक्ति में कोई भेद नही किया ।

(3) सगुण और निर्गुण का समन्वयः

तुलसी के समय में भक्तों में ब्रहम के निर्गुण का सगुण स्वरूप पर पर्याप्त संघर्ष चल रहा था इसी संघर्ष चल रहा था । इसी सघर्ष के परिणमस्वरूप सूरदास ने अपने 'भ्रमर' गीत से ब्रहम के निर्गुण रूप का खंडन करके सगुण की महत्ता का प्रतिपादन किया था । तुलसी ने सगुण वा निर्गुण के भेद को मिटाते हुए समान्वय स्थापित किया उन्होने कहा कि एक ही ब्रहम के दो उपासना पद्वातियां है । इनमें भेद नहीं है ।

जैसे – ''अगुकहि मनुमहि नही क्हु भेदा । गारहि पुरान वुध भेदा ।।''

(4) <u>शैव व वैष्णव मत का समन्वयः</u>

भारतीय विचाराधार में त्रिवेद की कल्पना की गई है । ब्रहमा, विष्णु और महेश में तीन प्रमुख देव है । विष्णु में अपना सर्वस्व मानने वाले वैष्णव और शिव को अपना सर्वस्व मानने वाले शैव कहलाते है । तुलसी के समय इन दोनों को प्रबल विरोध था तुलसी ने अपने 'मानस' में इस विरोध को समाप्त करने का प्रयास किया । उन्होने एक ओर तो शिव के मुँह को

– 'सोई मम इष्टदेव रघबीर ।

सेक्त जाहि सदा मुनि धीरा'' कहलवाकर शिव में राम का

उपासक सिद्व कर दिया और दूसरी ओर राम के मुॅह से

– ''शिव द्रोहीमनदास सो बर

मेहि सपनेहु नाही भावा''

(5) ब्रहमण एवम् सुद का समन्वयः

तुलसी ने मानस में गुरू वशिष्ट को निषाद राय को गले लगतो हुऐ दिखाकर ब्रहमण वा सूद समन्वय किया उनके समय में जातिगत भेदभाव बहुत अधिक

फेला हुआ था उस भेद को दूर करने के लिये जनता के समय उच्च आदर्श प्रस्तुत करना आवश्यक था । तुलसी ने यहि किया ।

(6) सामाजिक समन्वयः

तुलसी समय के संजग प्रहरी थे उनके काव्य में लोकहित की भावना पूर्णरूपेण पाई जाती है । उन्होने अपने काव्य 'रामचरित मानस में' सामाजिक और आंतरिक जीवन की विषमता को दूर कर उसमें समन्वय स्थापित करने की चेष्टा की । उन्होने पारिवारिक जीवन में भाई–भाई, पति–पत्नी, पिता–पुत्र, माता–पुत्र आदि के सम्बन्धों का आदर्श रूप प्रस्तुत किया । मर्यादाओं का पवित्र संदेश देने के लिए उन्होंने मर्यादा पुरूषोत्तम राम में लोगों के सामने रखा है । राम का चरित्र हर क्षेत्र में आदर्श है । उनके साथ–जुड़े हुए लक्ष्मण भरत–सीता हनुमान तथा मैज्ञलया आदि के चरित्र भी आदर्श है । इस प्रकार सामाजिक मर्यादा का निर्वाह तुलसी काव्य का महत्वपूर्ण संदेश है । ये काम उन्होने नही किया होता तो रामदशरथ क पुत्र एक राम ही बने होते व अर्न्तयामी राम नही हो पाते।

(7) राजनीति क्षेत्र में समन्वयः

तुलसी के काल में राधा और प्रजा के बीच गहरी खाई बनती जा रही थी । राधा प्रजा से कहीं अधिक श्रेष्ठ उन्नत एवम् महान समझा जाता था और ईश्वर का रूप माना जाता था । तुलसी ने अपने मत्य में राधा और प्रजा के कर्तव्यों का निर्धारण करते हुए दोनो के समीयत रूप की व्यवस्था की ओर बताया कि :

'' मुखिया मुख सो चाहिए खान–पान क्हुँ एक पलइ पोषइ सक्ल उंग तुलसी सहित विवेक''

(8) नर एवम् नारायण का समन्वयः

तुलसीदास में ''भय प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी'' कहकर उन्हीं ब्रहमा को कौशलया पुत्र था । दशरत पुत्र के रूप में दिखाकर अपने ईष्ट देव का साधारण मानव या नर से उपर उठते हुए । नारायण के ब्रहम् पद पर आसीन कर दिया है । इस प्रकार तुलसी ने राम के रूप में नर और नारायण का अथवा मानव और ब्रहम का सुन्दर समन्वय किया है ।

(9) ग्रहस्थियों और त्यागियों में समन्वयः

तुलसीदास के समय मे ग्रहस्थियों और त्यागियों के बीच गहरी खाई खुदी हुई थी। तुलसी ने इस खाई को भी पाटने की चेष्टा की है । उनके रामचरित मानस के राम ग्रहस्थ होकर भी त्यागी है और त्यागी होकर भी ग्रहस्थ क्योंकि पूरे चौदह वर्ष तक के त्यागी की तरह वन में रहे ।

(10) लोक परलोक का समन्वयः

तुलसी जी की समन्वयवादी दृष्टि लोक परलोक के समन्वय का भी बड़ा महत्व है । उनके 'राम' भगवान होते हुए भी इंसान है । भगवान इसलिए है क्योंकि विष्णु के अवतार है और इंसान इसलिए है कि सीता हरण के बाद जंगल में रोते मारे–मारे फिरते है । वियोगावस्था में राम की दशा देखने योग्य है । वे पशु–पक्षियों तक से सीता का पता पूछते है ।

''हे खग! मृग है! मधुकर श्रेणी ।
तुम देखी सीता मृग नैनी ।।

(11) भाग्य और पुरूषार्थ में समन्वयः

तुलसी एक महान कलाकार थे उन्होने भाग्यवाद और पुरूपार्थवाद में समन्वय स्थापित किया । पुरूषार्थ के विषय में उनका विचार है ।

''करम प्रधान विस रचि राखा ।

जो जस करइ सो तसफलू नाखा ।।''

(12) साहित्यक समन्वयः

तुलसी के काव्य में उनके समय में प्रचलित सभी भाषाओं और सौलियों का भी समन्वय हुआ है । कुछ रचना अवधी में लिखी है । कुछ ब्रज भाषा में कहीं कही मैथिली भाषा का भी प्रयोग उन्होने किया है । जहॉ तक शैली का प्रश्न है । प्रबन्धक शैली में उन्होने रामचरित मानस की रचना की है । मुक्तक शैली में 'दोहावली' 'गीतावली' विनय पत्रिका की रचना की है ।

(13) राम काव्य धारा और कृष्ण काव्यधारा में समन्वयः

तुलसी के साहित्य में एक नही अनेक चीजें ऐसी अदभूत मिलती है । जिनका समन्वय करके उनहोने संसार का बड़ा उपकार किया है । इसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि तुलसी स्वय् रामकाव्य धारा के प्रतिनिधि कवि थे । फिर भी कृष्ण चरित्र को लेकर उन्होने कृष्ण गीतावली की रचना की ।

(14) मानवतावादी विचारधारा में समन्वयः

लोकनायक तुलसीदास के साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यही कह सकते है कि उन्होने मानव की समस्त गतिविधियों का अपने काव्य में समन्वय किया है । कहने का अभिप्राय यह है कि उनका साहित्य ''सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'' उनकी सफल अभिव्यक्ति है । तुलसी ने अपने समय की समस्त दशाओं का बड़ा गहन अध्ययन करके अपने साहित्य के माध्यम से समाधान प्रस्तुत किया । कवित्य की दृष्टि से तुलसी को माधुर्म और आलोक अनुपम कथा मानव जीवन का सर्वांग निरूपण करती है । मर्यादा और संयम की साधना में गोस्वामी जी संसार के सर्वश्रेष्ठ कवि है ।

तुलसी का समन्वय जीवन और मव्य समनवय उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है । लोक और शास्त्र का समन्वयक ग्रहस्थ और वैराम्य का समन्वय भक्ति और ज्ञान का समनवय, भाषा और संस्कृति का समन्वयक निर्गुण और सगुण का समन्वय, कथा और तत्व ज्ञान का समन्वय, पंडित्य और अंपडित्य का समन्वय रामचरितमानस प्रारम्भ से लेकर अंत तक समन्वय का मत्य है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. रामचरित मानस – टीमकार हनुमान प्रसाद पोद्वार, गीत प्रेस गोरखपुर ।
2. तुलसीदास और उसका युग – ज्ञानमडल लिमिटेड, बनारस ।
3. गोस्वामी तुलसीराम समन्वय साधना प्रथम भाग – गोस्वामी तुलसीराम ।
4. हिन्दु समाज के प्रथमयटक तुलसीदास स विश्वनाथ ।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा ।

Copyright © 2017, Jyoti Kumari. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.